SvAmi VedAnta Desikan's

SudarshanAshtakam

Translated into Hindi by
Dr. Ankit Sharma
From the Commentary in English by
Oppiliappan Koil SrI V.Sadagopan SvAmi

Sincere thanks to:

Oppiliappan Koil SrI V.Sadagopan SvAmi for giving permission to translate his original commentary in English into Hindi language for the present release. We also thank him for kindly hosting this book in his website Sadagopan.org

Cover Image:

SrI Sudarsana Bhagavan at SrI Ahobila Divya desam (Lower Ahobilam)

Cover Design:

SrI Murali Desikachari

सुदर्शनाष्टकं

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्त–महादेशिकाय नमः

श्रीमते बालमुकुंद–महादेशिकाय नमः

श्रीमते वीरराघव–महादेशिकाय नमः

श्रीमते श्रीधर–महादेशिकाय नमः

श्री जानकीवल्लभ–भगवान् की असीम कृपा से और जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीमद् उत्तर अहोबिल श्रीझालरियापीठाधिपति अनंतश्रीविभूषित स्वामीजी श्री श्री 1008 श्री घनश्यामाचार्य जी महाराज एवं युवराज स्वामी श्री भूदेवाचार्य जी महाराज के आशीर्वाद से से प्रस्तुत

लक्ष्मीनाथ समारम्भां नाथयामुनमध्यमाम्।
अस्मादाचार्यपर्यन्ताम् वन्दे गुरुपरम्पराम्।।

यो नित्यमच्युत–पदाम्बुज–युग्म–रुक्म–व्यामोहतस्तदितराणि तृणाय मेने।
अस्मद्–गुरोर्भगवतोऽस्य दयैकसिंधो रामानुजस्य चरणौ शरणम् प्रपद्ये।।

रामानुजदयापात्रम् ज्ञानवैराग्यभूषणम्।
श्रीमद्वेंकटनाथार्यम् वन्दे वेदान्तदेशिकम्।।

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥
श्रीवीरराघवदयार्द्रकृपावतारं श्रीजानकीशपदपद्मपरागभृंगम्।
श्रीश्रीधरार्यचरणाम्बुजलग्नमौलिं श्रीदेशिकार्यघनश्यामगुरुं नमामः।।

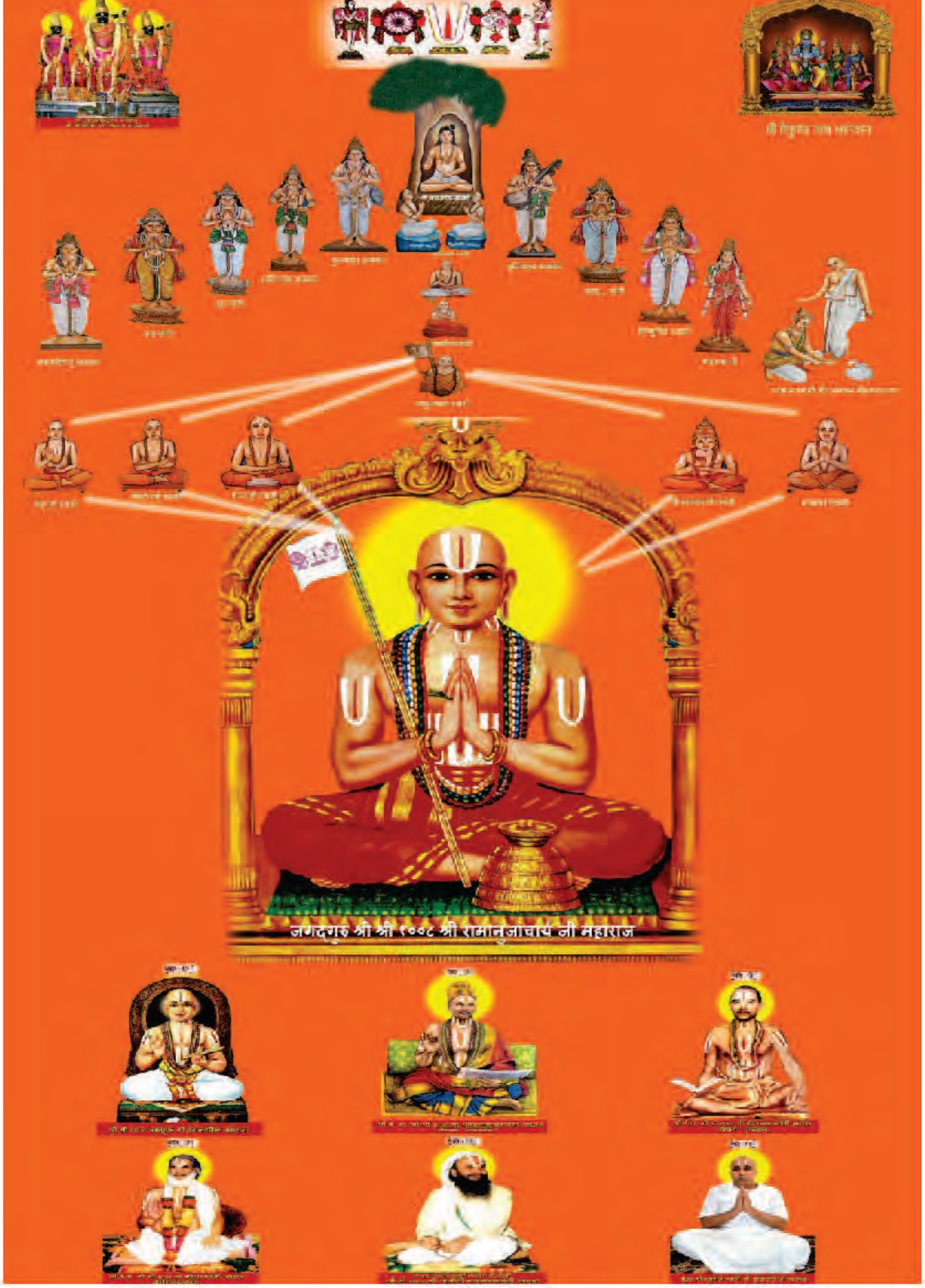
जगद्गुरु श्री श्री १००८ श्री रामानुजाचार्य जी महाराज

श्री वेदान्तदेशिकस्वामी द्वारा रचित, **सुदर्शनाष्टकं** पर
श्री ओप्पीलियप्पन कोविल श्री वरदाचार्य शठकोपन् स्वामी की पुस्तक पर
आधारित हिंदी अनुवाद एवं विशेष व्याख्या।
(Oppiliappan Koil Varadachari Sadagopan swami)

श्री
श्रीमते रामानुजाय नमः

परिचय

सामान्यतया जब परिवार में किसी को बुखार होता है या अन्य प्रकार की कोई बीमारी तब इस स्तोत्र का घरों में उच्चारण किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि स्वामी श्री वेदांत देशिक ने इसकी रचना एक महामारी की चपेट से तिरुपुत्तकुळी के निवासियों को छुटकारा दिलाने के लिए की थी। वैकल्पिक रूप से, यह भी कहा जाता है कि उन्होंने इसकी रचना तिरुवहिंद्रपुरम् में एक अन्य सम्प्रदाय के प्रतिनिधि से वाद–विवाद से पहले की थी। यह विवाद बाद में "परमत भंग" की श्री सूक्ति के रूप में प्रसिद्ध हुआ। यह सूक्ति अन्य सिद्धान्तों में व्याप्त दोषों का असाधारण विश्लेषण है और भगवद् श्री रामानुज स्वामी जी के सिद्धांत की महिमा का यशोगान है। स्वामी श्री वेदांत देशिक ने इस शास्त्रार्थ को भगवान् देवनाथ के समक्ष जीता था और फलस्वरूप भगवान् श्रीमन्नारायण और उन्होने विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त का वर्चस्व स्थापित किया।

स्वामी श्री वेदांत देशिक ने श्री सुदर्शन के यशगान में ८ श्लोकों की रचना के लिए धृताश्चण्ड को अलंकार रूप में चुना। उन्होंने "फल श्रुति श्लोक" के लिए औपछन्दसिदम् अलंकार को चुना। स्वामी श्री वेदांत देशिक द्वारा इन दोनों अलंकारों की ओर संकेत, सुदर्शन की वैदिक उत्पति को दर्शाता है।

श्री

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्त महादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किक केसरी ।
वेदन्ताचार्य वर्यो मे सन्निधतां सदा हृदि ॥

प्रतिभट श्रेणि भीषण वरगुण स्तोम भूषण
जनिभय स्थान तारण जगदव स्थान कारण ।
निखिल दुष्कर्म कर्शन निगम सद्धर्म दर्शन
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥1॥

शुभजगद्रूप मण्डन सुरगणत्रास खण्डन
शतमख ब्रह्म वन्दित शतपथ ब्रह्म नन्दित ।
प्रथितविद्वत्सपक्षित भजदहिर्बुध्न्य लक्षित
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥2॥

स्फुट तटिज्जाल पिञ्जर पृथुतर ज्वाल पञ्जर
परिगत प्रत्न विग्रह पटुतर प्रज्ञ दुर्ग्रह ।
प्रहरण ग्राम मण्डित परिजन त्राण पण्डित
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥3॥

निजपदप्रीत सद्गण निरुपधिस्फीत षड्गुण
निगम निर्व्यूढ वैभव निजपर व्यूह वैभव ।
हरि हय द्वेषि दारण हर पुर प्लोष कारण
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥4 ॥

दनुज विस्तार कर्तन जनि तमिस्रा विकर्तन
दनुजविद्या निकर्तन भजदविद्या निवर्तन ।
अमर दृष्ट स्व विक्रम समर जुष्ट भ्रमिक्रम
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥5 ॥

प्रथिमुखालीढ बन्धुर पृथुमहाहेति दन्तुर
विकटमाया बहिष्कृत विविधमाला परिष्कृत ।
स्थिरमहायन्त्र तन्त्रित दृढ दया तन्त्र यन्त्रित
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥6 ॥

महित सम्पत् सदक्षर विहितसम्पत् षडक्षर
षडरचक्र प्रतिष्ठित सकल तत्त्व प्रतिष्ठित ।
विविध सङ्कल्प कल्पक विबुधसङ्कल्प कल्पक
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥7 ॥

भुवन नेत्र त्रयीमय सवन तेजस्त्रयीमय
निरवधि स्वादु चिन्मय निखिल शक्ते जगन्मय ।
अमित विश्वक्रियामय शमित विश्वग्भयामय
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥8 ॥

फल श्रुति

द्विचतुष्कमिदं प्रभूतसारं पठतां वेङ्कटनायक प्रणीतम् ।
विषमेऽपि मनोरथः प्रधावन् न विहन्येत रथाङ्ग धुर्य गुप्तः ॥9 ॥

इति श्रीवेदान्तदेशिकरचितं सुदर्शनाष्टकं समाप्तम् ॥
कवितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने ।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः ॥

श्री

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्त महादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किक केसरी ।
वेदन्ताचार्य वर्यो मे सन्निधत्ताम् सदा हृदि ॥

श्लोक 1

प्रतिभट श्रेणि भीषण वरगुण स्तोम भूषण
जनिभय स्थान तारण जगदव स्थान कारण ।
निखिल दुष्कर्म कर्शन निगम सद्धर्म दर्शन
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥१॥

अर्थ:-

हे श्री सुदर्शन! आपके कौशल के भय से आपके स्वामी के भक्तों के सभी शत्रु भाग जाते हैं। सभी सद्गुण आप में अपना स्थान प्राप्त करते हैं। वे, जो आपकी पूजा करते हैं,
इस तट रहीत भव सागर को पार करते हैं एवं जन्म-मृत्यु के चक्र से छूट जाते हैं। सम्पूर्ण ब्रह्मांड आपकी पराक्रमी शक्ति द्वारा स्थिर है। जो आपकी शरण मे आते हैं, आप उनके सभी पापों को नष्ट कर देते हैं। आप अपने सभी भक्तों को वेदों द्वारा निर्धारित धार्मिक आचरण के ज्ञान के साथ आशीर्वाद प्रदान करते हैं । हे इन सब शुभ गुणों के भगवान् श्री सुदर्शन ! आपकी जय हो! आपकी जय हो!

श्लोक 2

शुभजगद्रूप मण्डन सुरगणत्रास खण्डन
शतमखब्रह्म वन्दित शतपथब्रह्म नन्दित ।
प्रथितविद्वत् सपक्षित भजदहिर्बुध्न्य लक्षित
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥२॥

"आप श्रीमन्नारायण के हाथ में एक अनमोल आभूषण के रूप में चमकायमान हैं। "

अर्थ :-

हे श्री सुदर्शन! आप श्रीमन्नारायण के हाथ में एक अनमोल आभूषण के रूप में चमकायमान हैं, जिनका संपूर्ण ब्रह्मांड शरीर के रूप में है। आपकी कृपा से देवता गण, असुरों द्वारा व्याप्त भय से मुक्त होते हैं। इंद्र और ब्रह्मा सदैव आपकी पूजा करते हैं। शुक्ल यजुर्वेद से संबंधित "सत्पत ब्राह्मण" आपकी महिमा का वर्णन करते हैं और आपको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इस संपूर्ण ब्रह्मांड के विद्वान लोग अपने प्रतिद्वंदियों पर विजय प्राप्त करने हेतु आपसे सहायता लेते हैं। "अहिर्बुधन्य संहिता" में वर्णन आता है कि अहिर्बुधन्य (शिव जी) आपकी पूजा करते हैं और आपके मनोहर रूप को अपनी आंखों से दर्शन करने के लिए आपसे वरदान मांगते हैं। हे प्रख्यात विशेषताओं वाले भगवान् सुदर्शन ! आपकी जय हो! आपकी जय हो!

श्लोक 3

स्फुट तटिज्जाल पिञ्जर पृथुतर ज्वाल पञ्जर
परिगत प्रत्नविग्रह पटुतर प्रज्ञ दुर्ग्रह ।
प्रहरण ग्राम मण्डित परिजन त्राण पण्डित
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥३॥

अर्थ:-

हे भगवान् सुदर्शन! आप बिजली(दीपकों) के जमघट के प्रकाश की भांति दीप्तिमान हैं। आपके आसपास की चमकदार "लपटों की जीभ" आपके लिए एक पिंजरे (घर) की तरह दिखाई देती है। आप "वासुदेव, संकर्षण और अन्य व्यूह मूर्ति के रूप में" ज्यामितीय रूप (यंत्र) में स्थान प्राप्त करते हैं। तीव्र बुद्धि वाले विद्वान लोग भी जब आपकी संपूर्ण महिमा को समझने का प्रयास करते हैं तो वे भी इसमें असफल हो जाते हैं। आपका यह दृश्य देखने मे अत्यंत सुंदर होता है जिसमें आपके 16 अस्त्र-

शस्त्र, आपकी सेवा में आपके हाथों में विराजमान हैं। जो लोग आपसे संरक्षण चाहते हैं, आप उनकी सुरक्षा में समर्पित रहते हैं।

ऐसे शुभ गुणों वाले श्री सुदर्शन! आपकी जय हो! आपकी जय हो!

श्लोक 4

निजपद प्रीत सद्गण निरुपधिस्फीत षड्गुण
निगम निर्व्यूढ वैभव निजपर व्यूह वैभव ।
हरि हय द्वेषि दारण हर पुर प्लोष कारण
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥४॥

अर्थ:-

हे भगवान् सुदर्शन! धर्मी लोगों को आपके पवित्र चरणों से दृढ़ लगाव है। छः कल्याण गुण --- ज्ञान, शक्ति, बल, धन, वीरता और प्रकाश - आप में अपने प्राकृतिक निवास प्राप्त करते हैं। वेदों के विभिन्न भागों में आपकी महिमा का वर्णन आता है। आपके भगवान् की तरह आपके "पर और व्यूह" रूप हैं। इंद्र आपका प्रमुख भक्त है ,आपने इंद्र के शत्रुओं से उत्पन्न भय को नष्ट कर दिया। शिवजी की नगरी काशी को आग की लपटों में जलाने के जिम्मेदार आप ही हैं। जब शिव जी ने त्रिपुरासुर से युद्ध किया, तब आप त्रिपुरासुर के विनाश में शिव जी के तीर पर विराजमान हुए थे। ऐसे कल्याण गुण वाले श्री सुदर्शन! आपकी जय हो! आपकी जय हो!

श्लोक 5

दनुज विस्तार कर्तन जनि तमिस्रा विकर्तन
दनुजविद्या निकर्तन भजदविद्या निवर्तन ।
अमर दृष्ट स्व विक्रम समर जुष्ट भ्रमिक्रम
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥५॥

अर्थ:-

हे भगवान् सुदर्शन! आप दुष्ट विचारों वाले असुरों को समूल नष्ट करते हो। आप उनके लिए संसार की अंधेरी रात को दूर करने वाले तेजस्वी सूर्य के समान हैं, जो आपके भक्तों को कष्ट देते हैं। आप असुरों द्वारा किये गए प्रत्येक आघात पूर्ण कार्य को दूर करते हैं।

जो लोग आपकी शरण मे आते हैं, आप उन लोगों में व्याप्त भ्रामक ज्ञान को नष्ट करते हो।

देवता गण आपके शौर्य पूर्ण कार्यों से हर्षित होते हैं और आपके शक्तिशाली कार्यों को देख कर आनंद का अनुभव करते हैं। आप अपने भक्तों के शत्रुओं से युद्ध में विभिन्न युद्ध कलाओं का परिचय देते हो। इन्ही सब शुभ गुणों से आपकी समृद्धि ऐसे ही बढती रहे ! आपकी जय हो! आपकी जय हो!

श्लोक 6

प्रथिमुखालीढ बन्धुर पृथुमहाहेति दन्तुर
विकटमाया बहिष्कृत विविधमाला परिष्कृत ।
स्थिर महायन्त्र तन्त्रित दृढ दया तन्त्र यन्त्रित
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥६॥

अर्थः-

हे भगवान् सुदर्शन! आप हमें इस प्रकार दर्शन देते हैं, जिसमें आपका एक चरण गतिशील रूप से आगे बढ़ रहा है और दूसरा चरण उसके पीछे-पीछे चल रहा हो। उस चाल में,आपका दर्शन बहुत मनोहर होता है। आप अपने भव्य तथा भयभीत करने वाले अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित रहते हैं। आप असुरों द्वारा उत्पन्न भ्रम (मायाजाल) के विजेता हो। इसलिए आप उनके मायाजाल से प्रभावित नही होते हैं। आप विभिन्न प्रकार के पुष्पों की माला से सुसज्जित रहते हो, जो आपके प्राकृतिक सौंदर्य को बढ़ाते हैं। जब आपका कोई भक्त यंत्र-मंत्र से आपकी पूजा करता है तब आप उन्हें करुणामय आशीर्वाद देने के लिए बाध्य रहते हो। ऐसे शुभ गुणों वाले श्री सुदर्शन! आपकी जय हो! आपकी जय हो!

श्लोक 7

महित सम्पत्सदक्षर विहितसम्पत्षडक्षर
षडरचक्र प्रतिष्ठित सकल तत्त्व प्रतिष्ठित ।
विविध संकल्प कल्पक विबुध संकल्प कल्पक
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥७॥

अर्थ:-

हे विभिन्न उत्कृष्ट गुणों वाले भगवान् सुदर्शन ! धार्मिक लोगों का सच्चा धन भगवान् के विषय में उनका ज्ञान है। जब वे लोग आपके श्री चरणों मे शरण ग्रहण करते हैं तो आप उन्हें मोक्ष रूपी अनश्वर धन का

आशीर्वाद देते हैं। जो लोग आपके षडाक्षर (६ अक्षर) मंत्र का जप करते हैं, वे अतुलनीय धन की प्राप्ति करते हैं। आपके भक्त (उपासक), दो त्रिभुजों से गठित षट्कोण वाले यंत्र के केंद्र में आपका आह्वान करके पूजा करते हैं। आप भगवान् द्वारा की गई प्रत्येक रचना में निवास करते हैं। आपके द्वारा निश्चित कार्य को पूरा करने का आपमें पूर्ण सामर्थ्य है। इस प्रकार आप "सत्य संकल्प" हैं और आपके भक्तों द्वारा अनुरोध करने पर आप उन्हें कल्पवृक्ष के समान सब कुछ प्रदान करते हैं। हे श्री सुदर्शन ! आपकी जय हो! आपकी जय हो!

श्लोक 8

भुवन नेत्रत्रयीमय सवन तेजस्त्रयीमय
निरवधि स्वादु चिन्मय निखिल शक्तेजगन्मय ।
अमित विश्वक्रियामय शमितविश्वग्भयामय
जय जय श्री सुदर्शन जय जय श्री सुदर्शन ॥८॥

अर्थ:-

हे भगवान् सुदर्शन, संपूर्ण ब्रह्मांड के नेत्र! आप तीनो वेदों के रूप हैं। आप यज्ञ की तीन अग्नियों (गार्हपत्यम्, आह्वानीयम् एवं यज्ञों की दक्षिणाग्नि) के रूप हैं। आप वास्तविक ज्ञान के अत्यन्त आकर्षक रूप हैं। आपके पास प्रत्येक कार्य को पूरा करने की शक्ति है। आपने इन सम्पूर्ण तत्वों के साथ ब्रह्मांड का रूप लिया। आप अपने भक्तों द्वारा यज्ञ की पूर्ण विधि से पूजे जाते हो। जो भक्त आपकी सभी दिशाओं से पूजा करता हैं, आप उनके सारे भय तथा बीमारीयों का विनाश करते हो। ऐसे शुभ गुणों के स्वामी श्री सुदर्शन! आपकी जय हो! आपकी जय हो!

"आप अपने भव्य एवं भयानक आयुधों से घिरे हैं।"

श्लोक 9

फल श्रुति

द्विचतुष्कमिदं प्रभूतसारं पठतां वेङ्कटनायक प्रणीतं ।
विषमेऽपि मनोरथः प्रधावन् न विहन्येत रथाङ्ग धुर्यगुप्तः ॥९॥

अर्थ:–

जो लोग श्री वेदांत देशिक स्वामी के नाम से जाने जाने वाले वेंकटनाथ द्वारा रचित , भगवान् श्री सुदर्शन की महिमा वर्णित 8 श्लोकों वाले इस स्तोत्र का, पाठ करते हैं उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। भगवान् श्री सुदर्शन की शक्ति से उन्हें यह अनुभव होता है कि उनके गन्तव्य में आने वाली सारी बाधांए दूर हो गई हैं और उनके मनोरथ पूर्ण हो गए हैं।

॥ इति श्रीवेदान्तदेशिकरचितं सुदर्शनाष्टकं समाप्तम् ॥

कवितार्किक सिंहाय कल्याण गुणशालिने ।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः ॥

श्री सुदर्शन भगवान् का वैभव

श्री सुदर्शन की महिमा को समझने के लिए हम इन कुछ प्रश्नों को समझते हैं।

1) "सुदर्शन" के नाम से किसे जाना जाता है?

2) "सुदर्शन" नाम का अर्थ क्या है?

3) भगवान् सुदर्शन के गौरव को समझने से हमें क्या लाभ हैं?

4) क्या हमें केवल उनकी महिमा के बारे में जानना पर्याप्त है या इसके अलावा और कुछ भी जानना चाहिए?

5) यदि कुछ अनुष्ठान होते हैं, तो वे कितने प्रकार के हैं? क्या यह(अनुष्ठान) किसी एक तक ही सीमित है या अनेक के लिए?

इस प्रविष्ठि का निष्कर्ष करने से पहले हम तिरुमलिसै आलवार (भक्तिसार आलवार) के बारे में विचार करते हैं, जो सुदर्शन भगवान् के अंशावतार हैं एवं उनसे श्री सुदर्शन भगवान् पर रचना करने के लिए अनुग्रह प्राप्त करते हैं। भक्तिसार आलवार ने अपने अंतिम दिन तिरुक्कुडन्दै में बिताए एवं वे कावेरी नदी के किनारे अपने नित्यानुष्ठान करते थे, जो तिरुक्कुडन्दै चक्रपाणि सन्निधि (सुदर्शन सन्निधि) से ज्यादा दूरी पर नहीं है। उन्होंने अपना जीवन भगवान् शारंग पाणि (आरावमुधन्) की सेवा में समर्पित कर दिया था। हम यह कल्पना कर सकते हैं कि किस प्रकार वे इन दो मंदिरों के बीच में यात्रा करते थे। ये महान आलवार, जिन्होंने नान्मुगन् तिरुवन्दादि नामक स्थान पर हर परिस्थिति में भगवान् श्रीमन्नारायण की सर्वोच्चता को स्पष्ट रुप से स्थापित किया है , और उन्होंने अपने पाशुरों में भगवान् सुदर्शन को नमस्कार किया है।

हम अगली पंक्तियों में सुदर्शन की महिमा जानने का प्रयास करते हैं।

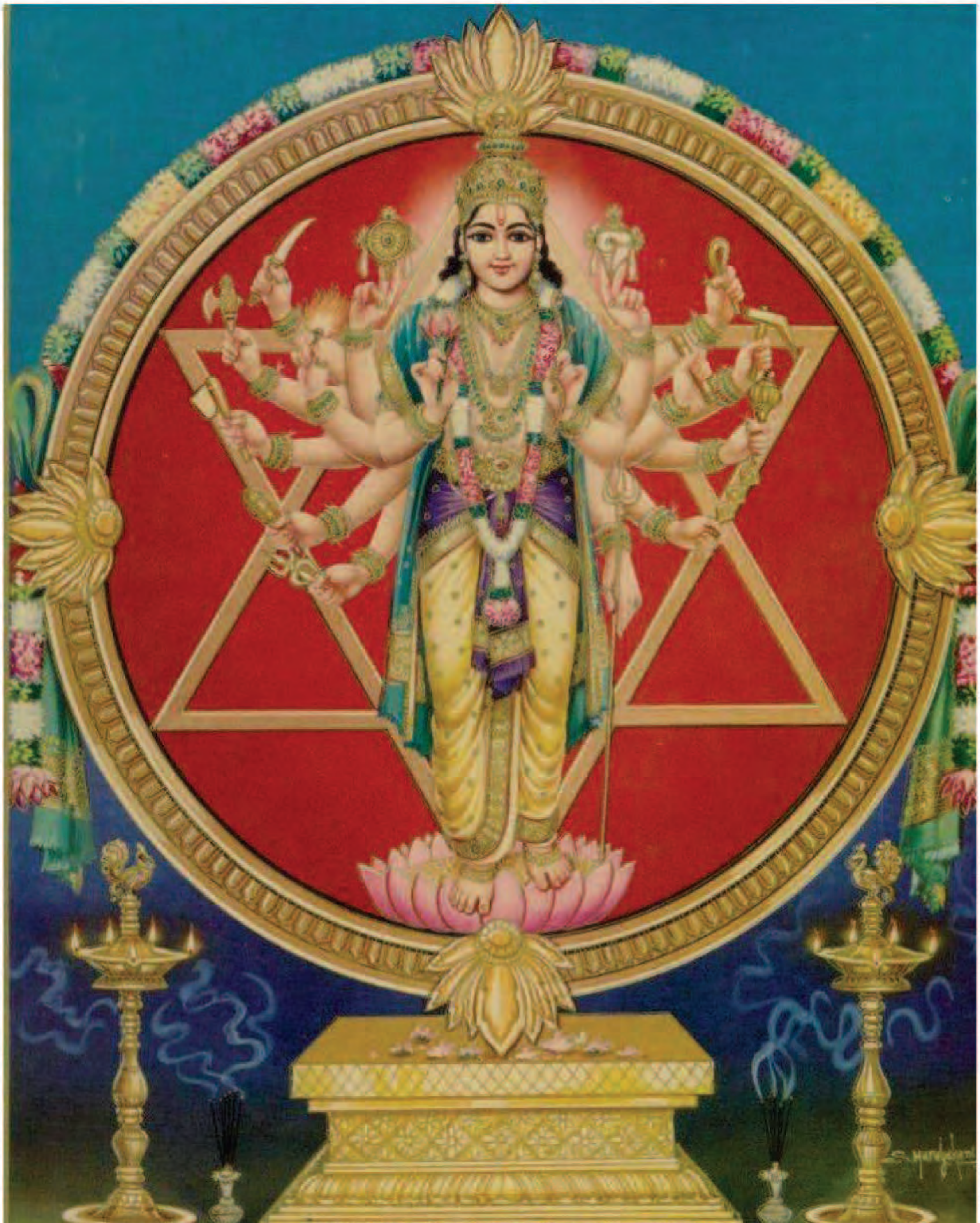
SRIMAHA SUDARSANA MOORTHI

1) "सुदर्शन" के नाम से किसे जाना जाता है?

स्वामी श्री वेदांत देशिक ने इस प्रश्न का उत्तर षोडस आयुध स्तोत्र के प्रथम श्लोक में दिया है।

स्वसंकल्पकलाकल्पैरायुधैरायुधेश्वरः ।
जुष्टः षोडशभिर्दिव्यैर्जुषतां वः परः पुमान्॥१॥

अर्थ:

श्रीमन्नारायण भगवान् के अस्त्र सुदर्शन, जो सभी प्रकार के अस्त्र–शस्त्र के स्वामी है , आप पर कृपा प्रदान करें। श्री सुदर्शन, सोलह दिव्य अस्त्रों द्वारा पूजित व्यक्ति है , जो भगवान् के संकल्प के रूप में छोटे रूप में खड़े हैं। सुदर्शन भगवान् परम पुरुष हैं , जो सोलह शक्तिशाली अस्त्रों द्वारा पूजित है , जो कि श्रीमन्नारायण के स्व–संकल्प का एकदेश–तुल्य भागम् हैं।

स्वामी श्री वेदांत देशिक के "षोडस आयुध स्तोत्र" का दूसरे और अठाहरवें श्लोक सुदर्शन भगवान् के तत्व पर प्रकाश डालता है।

यदायत्तं जगच्चक्रं कालचक्रं च शाश्वतम्।
पातु वस्तत्परं चक्रं चक्ररूपस्य चक्रिणः ॥२॥

अर्थ:

चक्र आलवार के हाथ में सुशोभित चक्रायुध (सोलह दिव्य अस्त्रों में से एक) आप सभी की रक्षा करें। यह ब्रह्मांड अनंत काल से काल तत्व के द्वारा घूम रहा है (क्षण, मिनट,घंटे,दिन, महीना, वर्ष)। यह काल तत्व चक्रायुध के नियंत्रण में है, जो कि भगवान् के अस्त्रों में प्रमुख है। भगवान् श्रीमन्नारायण स्वयं चक्र का रूप धारण करते है(सुदर्शन रूप) ।

अस्त्रग्रामस्य कृत्स्नस्य प्रसूतिं यं प्रचक्षते।
सोऽव्यात् सुदर्शनो विश्वं आयुधैः षोडशायुधः ॥१८॥

अर्थ:

सोलह दिव्य अस्त्रों से सुशोभित भगवान् सुदर्शन सम्पूर्ण ब्रह्मांड की रक्षा करें। ये इस संसार के सभी अस्त्रों के उत्पत्ति कारक हैं। इन्हें सम्पूर्ण अस्त्र- शस्त्र के स्रोत कारण के रूप में जाना जाता है।

इस प्रकार, सुदर्शन नाम से, हम समझते हैं कि वे (1) भगवान् के संकल्प हैं (2) वे काल तत्व के स्वामी हैं और (3) वे इस संसार के सम्पूर्ण आयुधों के उत्पत्ति कारक हैं।

ब्रह्मांड के निर्माण, संरक्षण और विनाश के पीछे भगवान् का संकल्प है। वे प्रख्यात संकल्प सुदर्शन भगवान् हैं (जगत प्रकृति भावो यः स शक्तिः परिकीर्तितः) ।

हमारे भगवान् में 6 गुण है इसलिए वे षडगुण से परिपूर्ण हैं। वे हैं- ज्ञान,बल,शक्ति,वीर्य,तेज और ऐश्वर्य । इस प्रकार वे इन सभी गुणों को सम्पूर्ण रूप से प्रदर्शित करने वाले परब्रह्म कहलाते हैं। परब्रह्म अपने आप मे एक है और वे एक से अधिक बनाने का संकल्प करते हैं (बहु स्याम इति) और यह संकल्प शक्ति सुदर्शन है।

षाड्गुण्य तत्परं ब्रह्म स्वशक्तिपरिबृंहितम्।
बहु स्यामिति संकल्पं भजते तत् सुदर्शनम्।।

2) "सुदर्शन" नाम का क्या अर्थ है?

"सुदर्शन का तिरुनाम" का अर्थ समझने के तीन तरीके हैं।

(1) भगवान् के संकल्प (रचना, संरक्षण,नष्ट करना) किसी के नियंत्रण में नही है क्योंकि

भगवान् से श्रेष्ठ या भगवान् के बराबर कोई नही है। उनके स्व संकल्प, स्व अधिकार , दर्शन रूप में जाने जाते है जो बिना किसी बाधा के प्रबल होते हैं। ये काल, देश और वस्तु की सीमाओं से परे है क्योंकि यह बहुत विशिष्ट, शुभ और अभूतपूर्व है, शुभ अर्थ वाला "सु" उपसर्ग दर्शन शब्द से जुड़ता है, जिससे सुदर्शन तिरुनाम बनता है। यह सुदर्शन का सुशब्दार्थ है।

(2) ये सुदर्शन परम पवित्र है, जो सभी को शुभ प्रदान करते हैं (सुहृदम सर्व भूतानां) । ये श्रीमन्नारायण के शांत और चमकदार कटाक्ष हैं । जब ये कृपा कटाक्ष के रूप में किसी जीव पर गिरते हैं , तो वह जीव सत्व गुण से प्रेरित होकर मोक्ष प्राप्त करने वाले सर्वोच्च वरदान को प्राप्त करता है।

जायमानं हि पुरुषं यं पश्येन्मधुसूदनः।
सात्विकस्स तु विज्ञेयः सः वै मोक्षार्थचिन्तकः।।

(3) भगवान् सौशील्य और सौलभ्य है जैसा कि उनके द्वारा घोषित किया गया है ।

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योस्ति न प्रियः।।

वे कोई पक्षपात नही करते है , वे कर्मो के आधार पर परिणाम देते हैं (विनायक)। वे अपने नियमों में समता रखते हैं। उनका "दण्डधरत्वम्" जीवों को उनके गलत कार्यों से मुक्त करवाने के लिए होता है।

श्रुतिस्स्मृतिः ममैवाज्ञा यस्तामुल्लंध्य वर्तते।
आज्ञाच्छेदी मम द्रोही मद्भक्तोऽपि न वैष्णवः।।

यहां तक कि जीव जो दंड भुगतता है, वह उसके अपराधों से छुटकारा पाने का कृपा कार्य करता है और वह अपने वास्तविक स्थान में पुनः आ जाता है। इस तरह से सुदर्शन अपना कार्य करता है (तमिल में नन्नोक्कु उडयवन्) । दुर्वासा ऋषि जैसे अपराधी भी सुदर्शन द्वारा नष्ट नही किये गए, जब क्रोधित दुर्वासा ऋषि द्वारा परम भागवत राजा अम्बरीष का अपराध किया गया। सुदर्शन भगवान् तब तक दुर्वासा ऋषि के पीछे दौड़े जब तक दुर्वासा ऋषि राजा अम्बरीष के चरणों मे नही गिरे, जिनका ऋषि ने अपराध किया था। इस प्रकार सुहृद के रूप में कृपालु सुदर्शन भगवान् ने ऋषि को छोड़ा।

फिर आयुधेश्वर सुदर्शन भगवान् ने भगवान् राम द्वारा चलाये गए ब्रम्हास्त्र के रूप में काकासुर का पीछा किया। काकासुर द्वारा जानकी माता के प्रति अपराध करने पर भगवान् जानकीनाथ ने घास के तिनके को ब्रम्हास्त्र की शक्ति के साथ काकासुर को नष्ट करने के लिए चलाया। जब तक काकासुर ने सकल लोक माता के चरणों मे क्षमा याचना नहीं मांगी तब तक सुहृद (सुदर्शन) ने काकासुर नामक असुर का सम्पूर्ण लोकों में पीछा किया।

संक्षेप में, सुदर्शन नाम के आह्वान से, हम इसका अर्थ समझते हैं जो दिव्य नाम है।

(1) भगवान् का अविनाशी संकल्प है जो उनके स्वतः संकल्प और स्व अधिकार से उत्पन्न होते हैं।

(2) सर्वलोका सुहृद, श्रीमन्नारायण का सबसे शुभ और परोपकारी कृपाकटाक्ष है।

(3) वे निष्पक्ष, अमृतमयी कटाक्ष हैं, जो जीवो के अपराधों को दण्ड देकर दूर करती हैं और कृपा कार्य मे संलग्न करवाती है जिससे जीव अपने वास्तविक स्थान (सर्वोच्च स्थान)को प्राप्त करें।

भगवान् सुदर्शन हम सब की कवच रूप में रक्षा करें।

3) भगवान् सुदर्शन के तत्व को समझने में क्या लाभ होते हैं?

उनके पूर्ण तत्व को समझने पर हमें यह अनुभव होता है कि हम स्वतंत्र नही है। आन्नुकुल्य संकल्प के साथ स्वयं का आचरण करने से (केवल वे कार्य करना जिससे भगवान् प्रसन्न होते हैं) और प्रतिकूल्या वर्जनम् (उन कर्मों से दूर रहना जिनसे भगवान् प्रसन्न नही होते है या नाराज होते हैं), इससे हम वे सब कुछ प्राप्त करते हैं जो चार प्रकार के साधक चाहते हैं।

4) क्या हमें इनके तत्त्व जानना ही पर्याप्त है? क्या हमें इसके अलावा कुछ और करने की जरूरत है?

हम जो चाहते हैं उसे पाने के लिए केवल उनके तत्व को जानना ही पर्याप्त नही है।
उदाहरण के लिए, यदि कोई भोजन करता है तो उसकी भूख शांत होगी। किसी की भूख शांत करने के लिए उसे पर्याप्त भोजन करवाया जाना चाहिये न कि उसे केवल आराम करवाया जाए। यदि कोई किताबी ज्ञान से यह जानता है कि "भोजन करने से भूख मिटती है।" केवल यह जानने से भूख कभी नही मिटती है। उसे भूख मिटाने के लिए वास्तविक रूप से भोजन करने के कार्य मे संलग्न होना पड़ेगा।

5) वह कौन सी क्रिया है जिसे हमें संलग्न करना चाहिए? क्या यह केवल एक कार्य है या एक से अधिक है?

चूंकि हम कई जरूरतों के आधार पर कई तरह के फलों की इच्छा रखते हैं, हम विभिन्न कृत्यों में संलग्न हो सकते हैं (जैसे कि काम्या और निष्काम कर्म) जो भी उपयुक्त हो। निष्काम कर्म के सिद्धांत को मानने वालों के लिए "लोक; समस्तः सुखिनो भवन्तु, महांन्तोनुग्रह्णन्तु।
जो कि प्रपन्नो और परमैकांति के लिए श्रेष्ठ होगा।

उनकी पूजा करने के कई तरीके हैं:

1. सुदर्शन भगवान् की आराधना करना ।

2. प्रतिदिन सुदर्शन स्तोत्र या सहस्र नाम का पाठ करना।

3.अर्चा विग्रह या सुदर्शन सालीग्राम का 9 या 1008 कलशों के जल से तिरुमंजन करना। सुदर्शन भगवान् का किसी कलश में भी आह्वान किया जा सकता है और उस जल के पवित्र स्नान से अनिष्ट (दुर्भाग्य) को दूर किया जा सकता है।

4. अर्चा विग्रह या सालीग्राम को फल इत्यादि निवेदन किया जा सकता है।(प्रसाद)

5. षडकोण यज्ञ कुंड में सुदर्शन यज्ञ किया जा सकता है।

6. 4 या 8 या 16 हाथों में उनके निर्धारित आयुधों से सुसज्जित सुदर्शन विग्रह की प्रतिष्ठा की जा सकती है। जिसमें विग्रह के सामने की तरफ सुदर्शन भगवान् की प्रतिमा हो और पीछे की तरफ चार हाथों में चार चक्र धारण किये हुए योग नरसिंह की प्रतिमा हो और वे दो त्रिभुजों (षडकोण) के बीच मे बैठे हो। अहिर्बुधन्य सहिंता और सुदर्शन शतक में भी सुदर्शन भगवान् के स्वरूप का वर्णन मिलता है।

7. सुदर्शन यन्त्र आराधना :- तांबे या सोने के पात पर सुदर्शन यंत्र को बिल्कुल सही प्रकार से बना कर उनकी पूजा करके भी सुदर्शन भगवान् के आशीर्वाद को प्राप्त किया जा सकता है। जिसमें उस यंत्र के ठीक पीछे निर्धारित बीजाक्षर मंत्र के साथ नरसिंह यंत्र भी हो।

जो व्यक्ति ऐसे यंत्र की उपासना करता है या ऐसे यंत्र का निर्माण करके सिद्ध करता है या जो अन्य लोगों को ऐसे सुदर्शन यंत्र की आराधना करने के लिए प्रेरित करता है, वो सकल सम्पदायें उस व्यक्ति तक पहुंच जाती है।

अहिर्बुधन्य सहिंता में यंत्र पूजा के लिए सर्व सिद्धि प्रदाता पूजा विधि का वर्णन आता है।

सुदर्शनेन युक्तस्य नारसिंहस्य यंत्रकम्ः।
यः कारयति तस्यान्यो लोको वश्यो भवेदपि।
एतल्लेखनमात्रेण सर्वं सम्पद्यते नृणाम् ।
सर्वसिद्धि प्रदं सर्वसम्पदामेककारणम्।
परापचारशमनं परराज्यप्रदं शुभम्।।

8. सुदर्शन मन्त्र जाप :- किसी सिद्ध सुदर्शन उपासक से सुदर्शन मंत्र की दीक्षा ले कर मंत्र जाप किया जा सकता है। सुदर्शन मंत्र के जाप को सुदर्शन साक्षात्कार के लिए बहुत ही लाभ प्रद माना गया है।

6) सुदर्शन यन्त्रम / अर्चा विग्रह :- जब भगवान् नरसिंह और सुदर्शन भगवान् यंत्र और विग्रह में दोनों एक साथ होते हैं तो उनके पूजन की सही विधि क्या है? किनकी आराधना पहले होनी चाहिए? यहाँ कौन इनके परिवार के रूप में इनके साथ होने चाहिए ?

तिरुक्कोट्टीयर स्वामी ने अहिर्बुधन्य सहिंता और मंत्र सिद्धन्त से उचित विधि के बारे में बताया है। इसका उत्तर प्राप्त करने का मुख्य मार्ग है: –

चक्रात्मा हरिरेव हि।

इस प्रकार सुदर्शन भगवान् की भगवद् रूप में पूजा नरसिंह भगवान् की उपस्थिति में की जा सकती है। यह विवादास्पद लग रहा है। यह उदाहरण इससे भी मिलता है कि श्री रामचंद्र का भगवद रूप रंगनाथ भगवान् के परिवार के रूप में अयोध्या में पूजा जाता है। (श्रीमद रामायण में "सह पत्न्या विशालाक्ष्य नारायणं उपागमत") पांच रात्र आगम की पद्म सहिंता में भी इसके बारे में अलग से बताया गया है।

श्री सुदर्शनाय नमः